www.thearyasamaj.org

Vol.7 August 2013 No.2
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

www.thearyasamaj.org

स्वप्न साकार करना अभी शेष है

–स्व. श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

देश के नौजवानो! बढ़े चलो, स्वप्न साकार करना अभी शेष है।
मुक्ति हमको मिली राजनीतिक अभी, मानसिक दासता से कसा है वतन।
आर्य संस्कृति मिली जा रही धूल में, हो रहा है सुतत्वों का अविरल पतन,
खड़ी है दनुजता दुकूलों पर देखो! बुलाता सभय हो तुम्हें देश है।
देश के नौजवानो! बढ़े चलो, स्वप्न साकार करना अभी शेष है।

बुलाती तुम्हें आर्य संस्कृति की गरिमा, बढ़े तुम चलो सत्य पथ पर चिरन्तन,
कहीं धरा पर पुनः न रह जाए, किसी भी मनुज का करुणार्द्र क्रन्दन,
दया-प्रेम-समता-सुगमता-सफलता का होवे धरा पर पुनः नम्र वन्दन,
मनुजता से पूरित हो प्रिय भूमि सारी, यही पुण्य ऋषियों का सन्देश है।
देश के नौजवानो! बढ़े चलो, स्वप्न साकार करना अभी शेष है।

प्राण-प्रण से है प्यारी हमें मातृभू, आँख उसको दिखाये कहाँ? कौन है?
देश के सैनिकों के समक्ष यह धरा, व्योम-तारे-समन्दर सभी मौन हैं,
विजयगान गाते हैं झरने यहाँ, हिन्द सागर कहीं पर? कहीं सोन है,
युगों से रही शौर्य-शक्ति हमारी, क्षितिज में धरा पर सदा शेष है!
देश के नौजवानो! बढ़े चलो, स्वप्न साकार करना अभी शेष है।

अशिक्षा का दानव हटे देश से, श्रम-परिश्रम की होवे यहाँ अर्चना,
जगे वेद की ज्योति फिर-से धरा पर हो सत्यं शिवं सुन्दरम वन्दना,
ललकार दो दानवी वृत्तियों को, कर दो, धरा पर न आवे मना,
गरजते जलधि सा उठो वीर पुत्रो! बुलाता तुम्हारा, तुम्हें देश है।
देश के नौजवानो! बढ़े चलो, स्वप्न साकार करना अभी शेष हैं।

www.thearyasamaj.org

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta
V.President
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062

Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan August 2013 Vol. 7 No.2
श्रावण-भाद्रपद 2070 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. स्वप्न साकार करना अभी शेष है
स्व. श्री राधेश्याम 'आर्य' 2
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 8
-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
4. श्रावणी-जन-मानस की साधना 9
-पं. गोपाल शरण विद्यार्थी
5. कैसी आजादी (स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष) 13
-श्री सुमन कुमार
6. संस्कृत के प्रति शिक्षण संस्थाओं का कर्तव्य 18
-डॉ. कृष्णलाल
7. लीला पुरुषोत्तम कर्मयोगी श्री कृष्ण 20
-आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार
8. हंटर कमीशन से लेकर सच्चर कमीशन तक एक-सा षड्यंत्र 25
9. योग एक जीवन दर्शन 28
-स्वामी रामदेव
10. The Power of One 31
-Satish Prakash
11. Yoga Sadhana Shivir (Ajmer) 33
-B.D. Ukhul

www.thearyasamaj.org

संपादकीय

हिमालयी सुनामी से महाविनाश

मुझे हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार जयशंकर 'प्रसाद' के महाकाव्य कामायनी की ये पंक्तियाँ याद आ रही हैं-

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छाँव,
एक पुरुष (मनु) भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह।

उत्तराखण्ड में 16 जून को बादल फटने से सामान्य से 450 गुना अधिक वर्षा हुई फलस्वरूप उत्तराखण्ड में जीवनदायिनी गंगा की सहायक नदियाँ अचानक विकराल रूप धारण कर अपने तटबंधों को तोड़कर मार्ग में बसे गाँवों व नगरों को उजाड़ती हुई तीव्र गति से बहने लगी। जो मंदाकिनी अपने नाम के अनुरूप मंद-मंद गति से बहती थी उसने ऐसा रौद्र रूप धारण किया कि केदार घाटी के पूर्वोत्तर की ओर मंदाकिनी के जलस्रोत ग्लेशियर के टूटकर गाँधी (पार्वती) सरोवर से गिरने से उसमें ऐसा उफान आया कि वह अपने तटों को तोड़ कर बहने लगी। उसने केदारनाथ, रामबाड़ा, गौरीकुंड आदि की पूरी आबादी को अपने प्रवाह में समेट लिया और पीछे छोड़े उजाड़, बियाबान ध्वस्त खंडहर जिसके मलबे में लाशों के ढेर बिछे पड़े थे। केदार घाटी में जहाँ नब्बे धर्मशालाएँ थीं जिनमें हजारों तीर्थयात्री ठहरे हुए थे, पुजारियों की बस्ती, पूरा बाजार सब ध्वस्त हो गए यहाँ तक कि शंकराचार्य की समाधि भी नहीं बची। बस एकमात्र केदारनाथ का मंदिर खड़ा रहा। मंदाकिनी अपने तीव्र प्रवाह में बड़े-बड़े शिलाखंडों के साथ प्रलयंकर गति से सब कुछ अपने साथ बहा ले गई और छोड़ गई बड़ी-बड़ी चट्टानें और लाशों के

www.thearyasamaj.org

ढेर। कुछ भाग्यशाली ही थे जो ऐसे भयंकर प्रवाह के मूक दर्शक बन सके। ऐसे में देवभूमि की तीर्थयात्रा नरक-यात्रा बन गई। यह स्थिति केवल एक क्षेत्र की नहीं थी। पूरे उत्तराखंड में बादलों के फटने और मूसलाधार वर्षा से बुरा हाल हो गया। इसी दैवी आपदा में 150 गाँव और तटवर्ती नगर बह गए। नदी के तट पर बने सैकड़ों मकान नदी में ताश के पत्तों की तरह ढह गए। उनके साथ ही कितनी ही कारें और बसें भी गंगा की धारा ने लील लीं।

इस भयंकर बाढ़ में हजारों यात्री अपने संबंधियों से बिछुड़ कर काल के ग्रास हो गए। वहाँ न पीने को पानी था न खाने के लिए भोज्य पदार्थ। कुछ लोग तो जंगलों में पैदल चलते-चलते भूख के मारे रास्ते में गिर पड़े। ऐसा ही कुछ वर्णन फुटबाल के कोच श्री ललित पंत ने किया है। वे अपने परिवार के साथ केदारनाथ से ऊखी मठ को घने जंगल और पहाड़ी रास्ते से जा रहे थे। उन्होंने रास्ते में 1000 से अधिक लोगों के शव पड़े देखे। उनमें कुछ को उन्होंने मंदाकिनी में बहा दिया। इनमें से अधिकांश लोग भूख और प्यास से तड़प कर मरे थे। ये भी छः दिन लगातार इन जंगलों में भटकते रहे। अन्ततः श्री पंत ने हेल्पलाइन पर संदेश भेजा कि हमें यहाँ से निकालने का प्रबंध करें। नहीं तो हम यहीं मर जाएँगे। हमारे चारों ओर लाशों के ढेर हैं। हमारे आस-पास पहाड़ों के हिस्से टूट कर गिर रहे हैं। हम बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं हैं।

इसी तरह दिल्ली से 200 लोगों का एक दल चार धाम की यात्रा पर निकला था। इनके परिवार वाले चिंतित थे क्योंकि 21 जून के बाद से उनसे संपर्क नहीं हो रहा था। 21 जून को उन्होंने बताया था कि उनके 10 सदस्य बाढ़ में वह गए हैं। उसके बाद से उनका भी कोई समाचार नहीं। ऐसी ही स्थिति कितने ही लोगों की थी।

कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्होंने आपदा की इस घड़ी का

www.thearyasamaj.org

नाजायज फायदा उठाया। पता चला है कि हेमकुंड की यात्रा पर गया 12 साल का हरमनप्रीत प्यास के मारे बेहोश हो रहा था तो उसके रिश्तेदार ने एक होटल से पानी की बोतल माँगी तो उसने 200 रु. माँगे। वह एक कटोरा चावल 500 रु में और एक रोटी 180रु. में दे रहा था। एक बड़ी ही दर्दनाक घटना गौरीकुंड की है। वहाँ कुछ डॉक्टर लोगों का इलाज कर रहे थे। दो नेपाली हाथ में प्रेशर कुकर लिए डॉक्टर के पास इलाज के लिए आए। डॉक्टर ने पूछा ये कुकर क्यों साथ लिए हो? उन्होंने कहा 'ऐसे ही'। डॉक्टर को शक हुआ तो उसने उनको' सैनिकों के हवाले कर दिया। उन्होंने उनसे कुकर खोलकर दिखाने को कहा। परंतु वे चुप खड़े रहे। तब सैनिकों ने कुकर खोलकर देखा तो वे हैरान रह गए उनमें मृत लोगों की अंगुलियाँ काट कर रखी हुई थीं जिनमें अँगूठियाँ पड़ी थीं। इसके विपरीत कहीं-कहीं इसका संवेदनापूर्ण मानवीय पक्ष भी सामने आया। तबाही के बीच लोग भूख-प्यास से तड़प रहे थे, तब बगौरी गाँव के लोगों ने उनकी जी जान से सहायता की। उन्हें अपने घरों में ठहराया। खाना खिलाया, अपने घर का पूरा राशन दे दिया। उन्हें अपने बिस्तरों पर. सुलाया और खुद रात को जमीन पर सोए। इन्हें लोग देवदूत से कम नहीं मानते थे। ऐसे उदाहरण अन्यत्र भी मिले हैं।

उत्तराखंड में घटित आपदा के कारण-

1. उत्तराखंड के पर्वत सुघटित नहीं है। वे तभी सुघटित होंगे जब उन पर वृक्ष और वनस्पतियाँ लगी हों। इसके अतिरिक्त इन क्षेत्रों में पेड़ों के काटने पर रोक होनी चाहिए। यही भूस्खलन से बचाव का उपाय है।
2. यहाँ अलकनन्दा, मंदाकिनी और भागीरथी पर कई विद्युत परियोजनाएँ बनाई गई हैं, इनकी संख्या 70 है। इनमें से प्रत्येक में 100 से 10 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है। इसके लिए इन नदियों की धाराओं को परिवर्तित किया

www.thearyasamaj.org

गया है। इस परिवर्तन का भी दुष्प्रभाव इस विनाश पर पड़ा है।

3. इस पर्वतीय क्षेत्र में इन योजनाओं के कारण आबादी बढ़ती जा रही है इसलिए उनके आवास के लिए पूरा ढाँचा खड़ा करना पड़ता है। सड़कों का विस्तार हो रहा है। इसके लिए प्राकृतिक वातावरण से छेड़छाड़ आवश्यक हो जाती है। साथ ही इन क्षेत्रों में यात्रियों और पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इसके कारण पर्वतीय क्षेत्रों में कारों, बाइक्स और बसों का आना-जाना भी बढ़ गया है। इससे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है।

आपदा-प्रबन्धन की योजनाओं पर अमल का अभाव

कुछ समय पूर्व राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन के लिए प्रधानमंत्री के नेतृत्व में प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए एक पूरी योजना तैयार की गई थी। परन्तु उसे कार्यान्वित करने की तैयारी नहीं की गई। न ही इसके लिए संबंधित एजेंसियों द्वारा विभिन्न आपदा क्षेत्रों में कभी पूर्वाभ्यास ही किए गए। इसके लिए हमें अमेरिका, जापान आदि देशों द्वारा आपदाओं से निबटने के लिए अपनाए गए तरीकों को अपनाना चाहिए। इन योजनाओं को फाइलों से निकाल कर उन पर क्रियात्मक अमल होना चाहिए।

इन योजनाओं में आपदाओं के बाद किए जाने वाले राहत के कामों में स्थानीय अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को शामिल किया जाना चाहिए। ऐसे प्रत्येक अवसर पर हमें सेना का मुख नहीं देखना चाहिए। इसमें स्थानीय पुलिस बल को शामिल किया जा सकता है। सभी कार्यदलों में परस्पर समन्वय का होना अत्यधिक्र महत्वपूर्ण हैं। इन सब बातों का ध्यान आपदा प्रबन्धन अधिकारी को रखना चाहिए तभी आपदा प्रबंधन का अभियान सफल होगा।

संपादक

www.thearyasamaj.org

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-69)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

पिछले सूत्र के आधार पर शिष्य शंका करता है कि प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों की फलभूत प्रमा या अनुभूति अचेतन बुद्धि को होती है या चेतन पुरुष को? यदि बुद्धि को होती है ऐसा मानें तो अचेतन को अनुभूति कैसे हो सकती है? यदि चेतन पुरुष को मानी जाए तो वह परिणामी हो जाएगा। हर बाहरी विषय बुद्धि में पहुँचने पर जैसे बुद्धि विषयाकार परिणत हो जाती है, वैसे ही जब वह विषय चेतन तक पहुँचेगा तो उसका भी विषयाकार परिणाम मानना होगा। सूत्रकार इसका समाधान इस सूत्र में करते हैं। सूत्र है-

चिदवसानो भोगः।। 69।।

अर्थ- (चिदवसानः) चेतन पर्यन्त (भोगः) भोग है।

भावार्थ - सुख-दुःख आदि की अनुभूति ही भोग है। इसका अवसान चेतन में होता है। भोग बुद्धि तक जाकर ही नहीं रह जाता, उसकी पहुँच चेतन तक है। जड़ जगत् की रचना चेतन जीवात्माओं के भोग के लिए है। संसार में सुख-दुःख आदि का अनुभवरूप भोग, जीवात्मा तक पहुँच कर समाप्त होता है उससे पहले वह रुक नहीं जाता। अतः सारा संसार जीवात्मा का भोग्य है। संसार की सृष्टि उसी के लिए हुई है। सुख-दुःख की अनुभूति से आत्मा में कोई विकार या परिणाम नहीं होता। आत्मा का अपना शुद्ध स्वरूप चेतन है। चेतन को किसी प्रकार का अनुभव होना उसकी वास्तविक स्थिति में रहना प्रमाणित करता है। कोई भी अनुभव चेतन के अस्तित्व में प्रमाण है। अथवा अनुभव बिना चेतन के अस्तित्व के संभव नहीं। जैसे स्वच्छ स्फटिक मणि (लाल) जपा कुसुम के संपर्क से लाल प्रतीत होती है परन्तु उसके अपने स्वरूप में कोई अन्तर नहीं पड़ता। इसी प्रकार जैसे साफ पानी में चंद्रमा के प्रतिबिंबित होने पर पानी के अपने स्वरूप में कोई विकार नहीं आता; ठीक ऐसे ही बुद्धि के संपर्क से सुख-दुःख आदि का साक्षात् अनुभव करने पर आत्मा के अपने शुद्ध चेतन स्वरूप में कोई अन्तर या विकार नहीं आता।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी, नई दिल्ली-10058

www.thearyasamaj.org

श्रावणी- जन-मानस की साधना और ज्ञान निर्वचन का पावन पर्व

-पं. गोपाल शरण विद्यार्थी

श्रावणी आर्यों की सबसे उत्कृष्ट पर्व इस लिए मानी जाती रही है क्योंकि यह वेद-वेदांगों के स्वाध्याय का पावन पर्व है। वेद-वेदांगों के स्वाध्याय से बढ़कर अन्य कोई ऐसा पावन कर्म नहीं है जो मनुष्य मात्र को उसके परम लक्ष्य की प्राप्ति का आधार बने। चतुर्मास करने की परम्परा वेदों के स्वाध्याय से ही जुड़ी हुई है। इसलिए महर्षि ने वेदों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को परम धर्म घोषित किया। इसके पीछे उनकी मंशा यही थी कि वेद-वेदांगों के स्वाध्याय के माध्यम से आर्यजन जहाँ अपनी उन्नति का परम पावन मार्ग पा सकेंगे वही पर समाज कल्याण के सूत्र और उनमें वर्णित प्रेरणाओं और विद्याओं को भी समाज में प्रचारित-प्रसारित कर सकेंगे। श्रावण का प्रारम्भ हो चुका है। आप इसका लाभ वेद-वेदांगों के स्वाध्याय और वेदों के प्रचार-प्रसार करके उठा सकते हैं। श्रावणी क्या है? इसका क्या महत्व है और इसे कैसे मनाएँ, इसी पर आध ारित है पं. गोपाल शरण विद्यार्थी का चिन्तन परक लेख।

श्रावणी पर्वः अर्थ एवं महत्व

श्रावणी शब्द 'श्रु श्रवणे' धातु से सिद्ध होता है। इसका अर्थ है- श्रवण करना, अर्थात् सुनना। श्रवण के साथ-साथ मनन आवश्यक है। पर्व शब्द 'पृ पूरणयो' धातु से बनता है जो प्रेरित या पूर्ण करे, प्रसन्न करें, वह पर्व कहलाता है। हमारे आर्यावर्त को यह गौरव प्राप्त है कि इसका प्रत्येक पर्व वैज्ञानिकता और मानवीय जीवन की सुन्दरता का प्रतीक है। श्रावणी पर्व मनीषियों, चिन्तकों, विचारकों, विद्वानों और बुद्धिजीवियों का पर्व है, तो विजयादशमी प्रशासकीय एवं रक्षक वर्ग का, दीपावली उद्यमी एवं व्यापारी वर्ग का और मिलन का पर्व होली चारों वर्णों का सम्मिलित पर्व है। यह समानता और सौमनस्यता सभी भारतीय पर्वों की विशेषता है।

श्रावणी की प्राचीन परम्परा-

श्रावणी अथवा श्रवण पर्व के तीन प्रमुख अंग है- (1) सुनाने

www.thearyasamaj.org

वाला, अर्थात् वक्ता या प्रवचन-कर्ता (2) सुनने या श्रवण करने वाला 'श्रोता' (3) सुनाने योग्य कथा या विषयवस्तु। भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में सुनाने और सुनने वालों की सुविधा की दृष्टि से वर्षा ऋतु के चार मास इसी कार्य के लिए निर्धारित थे। वर्षा के कारण प्रत्येक वर्ग के लोग अपने कार्यों से विरत होकर बालकों की शिक्षा हेतु ऋषियों, मुनियों, आचार्यों द्वारा संचालित गुरुकुल जाते थे। गुरुकुलों में प्रवेश श्रावण मास में होता था और श्रावणी-उपाकर्म तथा बालकों के विधिवत् उपनयन संस्कार के उपरान्त अध्ययन-अध्यापन का सत्र आरम्भ होता था। इस प्रकार स्वाध्याय, सत्संग और बृहद्यज्ञों का आयोजन निरन्तर चार मास तक चलता था। वर्षा ऋतु के कारण सन्यासी भी इन दिनों किसी स्थान पर डेरा डाल कर चातुर्मास व्यतीत करते थे।

अनेक विद्याओं का पठन-पाठन आर्यावर्त में प्राचीन काल से प्रचलित था। प्रमाणस्वरूप छान्दोग्य उपनिषद् में नारद और सनत्कुमार संवाद में नारद जी ने सीखी हुई ये विद्याएँ गिनाई हैं- छान्दोग्य उपनिषद् (सप्तम प्रपाठक) नारद जी के कथनानुसार (1) ऋग्वेद (2) यजुर्वेद (3) सामवेद (4) अथर्ववेद (5) इतिहास (6) पुराण (कथा साहित्य) (7) पंचम वेद (गन्धर्व वेद- संगीत व नृत्य शास्त्र) (8) पित्र्य विद्या (नृतत्व विद्या) (9) राशि विद्या (गणित व सांख्यिकी) (10) वैद विद्या (भौतिकी व रसायन शास्त्र) (11) निधि शास्त्र (वित्त एवं अर्थशास्त्र) (12) वाको-वाक्य (तर्क शास्त्र) (13) एकायन (नीति शास्त्र व युद्ध शास्त्र) (14) देव विद्या (द्यौ व अन्तरिक्ष विज्ञान) (15) भूतविद्या (प्राणी विज्ञान और जैविकी) (16) क्षत्र विद्या (शस्त्रास्त्र व युद्ध विद्या) (17) नक्षत्र-विद्या (ज्योतिष) (18) सर्प विद्या (विष-चिकित्सा) (19) देवयजन विद्या (यज्ञ विज्ञान) उन्नीस विषयों का ज्ञान उन्हें था। वेद, वेदांग, ब्राह्मण, दर्शन, नीति शास्त्र, अध्यात्म-चर्चा प्रमुख विषय थे। वर्णाश्रम धर्म, आश्रम मर्यादा, प्राचीन ऋषियों और पूर्वजों का स्मरण, सब के लिए विद्या एक ही थी-वैदिक वाङ्मय का अध्ययन, मनन, चिन्तन, प्रवचन और श्रवण। संन्यासी चाहे सारे कर्मो का त्याग कर दे, परन्तु स्वाध्याय उसके लिए भी

www.thearyasamaj.org

आवश्यक था। तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान, श्रावणी पर्व का क्रिया-योग था। धर्म के तीन स्कन्ध (1) यज्ञ (2) अध्ययन (स्वाध्याय) और (3) दान, श्रावणी पर्व के विधि भाग थे।

श्रावणी पर्व का वर्तमान स्वरूप

प्राचीन परम्परागत ढंग से श्रावणी पर्व का जो भव्य स्वरूप चला आ रहा था, वह विगत सैकड़ों वर्षों से लुप्तप्राय हैं, हाँ, कुछ चिह्न अवश्य बाकी हैं। विद्यालयों के सत्र अभी भी जुलाई मास से प्रारम्भ होते हैं। दक्षिण भारत में जन्म से ब्राह्मण समुदाय में उपाकर्म (यज्ञोपवीत परिवर्तन) की प्रथा शेष है। यवनों के शासन में उत्तर भारत में जब यज्ञोपवीत जबरन तोड़े जाने लगे, तब पुरोहितों ने यजमानों के हाथों/कलाइयों पर मौलि बाँध कर उपाकर्म की विधि पूरी की। इसे 'रक्षा-सूत्र' कहने लगे। जब ब्राह्मणत्व का भी ह्रास हो गया तो भारत की नारियों ने अपने धर्म की रक्षार्थ सबल वीरों की कलाइयों पर 'रक्षा सूत्र' बाँध कर उन्हें अपने धर्म-भाई कहना आरम्भ किया। इससे स्त्रियों के धर्म की रक्षा तो हुई परन्तु कालान्तर में बहनों की अपने सहोदर तथा रिश्ते व धर्म के भाइयों के हाथों में रक्षा-सूत्र (जिसका नाम राखी हो गया) बाँधने की परिपाटी ही पड़ गई। श्रावणी ने रक्षा बन्धन का रूप बहन-भाई के पवित्र प्रेम के प्रतीक के रूप में ले लिया। अर्थ-प्रधान इस युग में आज रक्षा-सूत्र (राखी) भी द्रव्य-सूत्र बन गया है। बहनों के प्रति भाइयों में रक्षा और उत्तरदायित्व की भावना का स्थान रुपयों और द्रव्य ने ले लिया।

श्रावणी और हमारा कर्त्तव्य

खेद की बात है कि पर्व भी आज आर्य समाज के भवनों तक सिमटने जा रहे हैं। पर्व मूल रूप से गृहकृत्य और उत्सव व सामूहिक कृत्य हैं। प्रत्येक आर्य-परिवार में इस श्रावणी पर्व से सम्बन्ध प्राचीन काल के उपाकर्म, उत्सर्जन, ऋषियों और पूर्वजों का स्मरण (ऋषि तर्पण), वर्षाकालीन चातुर्मास्येष्टि अग्निष्टोम होम का अनुष्ठान, वेद और आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, पठन-पाठन, प्रवचन और श्रवण होना चाहिए। परिवार के स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकाएँ, युवा-वृद्ध सभी यज्ञोपवीत धारण करें अपने किसी ज्ञात दुर्गुण को छोड़ने और किसी सद्गुण को

www.thearyasamaj.org

धारण करने का व्रत यज्ञाग्नि के समक्ष लें। कुछ नहीं तो स्वाध्यायशील होने के व्रत तो अवश्य दोहराएँ।

स्वाध्याय की महत्ता

हमारे समस्त वैदिक वाङ्मय, यथा वेद, स्मृतियों, उपनिषदों, दर्शनों और ब्राह्मण ग्रन्थों में स्वाध्याय की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है। शतपथ ब्राह्मण 11/5/7/1-2 में लिखा है कि- "स्वाध्याय और प्रवचन दोनों प्रिय कर्म हैं उन्हें करने वाला व्यक्ति एकाग्रमन होता है, सुख से सोता है, अपना चिकित्सक बनता है। इन्द्रियों का संयम, एकरसता, प्रज्ञावान और लोगों में यश प्राप्त करता है। प्रज्ञा की वृद्धि से ब्राह्मणोचित चार धर्मों को, यथा श्रेष्ठतम ब्राह्मणत्व अनुकूल आचरण, कीर्ति और लोककल्याण को प्राप्त होता है। सत्कार, दान, श्रद्धा और अवध्यता का पात्र बनता है। द्यौ और पृथिवी के बीच जो कुछ श्रम है, स्वाध्याय करता है वह परम लक्ष्य और श्री को प्राप्त होता है, अतः स्वाध्याय अवश्य करें।"

स्वतः स्वाध्याय में मजबूरी होने, समय के अभाव, अशिक्षित होने, नेत्र-दृष्टि कम होने पर सत्संग में श्रवण करने का व्रत लें। वस्तुतः पर्व मनुष्य को व्रती बनाते हैं। व्रतों को पूर्ण करने से जीवन में दक्षता आती है। दक्षता-प्राप्ति से ही व्यक्ति दीक्षित होता है। दीक्षा से प्राप्त करता है दक्षिणा, अर्थात् सम्मान, प्रतिष्ठा, कीर्ति को जो अंततोगत्वा सत्य-स्वरूप परमेश्वर की प्राप्ति में सहायक हो सकती है। हम पुनः श्रावणी पर्व के प्राचीन गौरव को व्यक्तिगत और संस्थागत दोनों ही रूपों में प्रतिष्ठित करें। इस विषय में यतियों, संन्यासियों, पुरोहितों और धर्माचार्यों का दायित्व चातुर्मास और चातुर्मास्येष्टि अग्निष्टोम होम आदि की परम्परा की पुनः स्थापना में पहल करने के कारण और भी बढ़ जाता है। जनसाधारण में श्रावणी की महत्ता को वैदिक परम्परा में प्रचारित-प्रसारित और प्रतिष्ठित करने के लिए विधिवत् कार्यक्रम बनाना चाहिए। वेद-वेदांगों और शास्त्रों पर आधारित वैदिक विद्वानों को आमन्त्रित करके श्रावणी पर्व को उत्साहपूर्वक मानना चाहिए। तभी सच्चे अर्थों में श्रावणी पर्व मनाना सफल हो सकता है।

www.thearyasamaj.org

कैसी आजादी

(स्वतन्त्रता दिवस पर)

-श्री सुमन कुमार

कहते हैं कि 14 अगस्त 1947 तक हम अंग्रेजों के गुलाम थे और 15 अगस्त 1947 की आधी रात को हम स्वतंत्र हो गये। विचारणीय है कि एक दिन में ऐसा क्या परिवर्तन आया, जिसे हम स्वतंत्रता कह कर प्रसन्न होते हैं? इस सन्दर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार करना चाहिए।

क्या बदला?

क्या इसके बाद, जो ब्रिटेन की रानी का प्रतिनिधि वायसराय लार्ड माउंटबेटन था, उसे हटा दिया गया था? क्या वे सभी सरकारी नौकरशाह, जो ब्रिटिश सरकार के वफादार थे, हटा दिये गये थे और उनका स्थान राष्ट्रभक्त स्वतंत्रता सेनानियों और क्रान्तिकारियों ने ले लिया था? क्या अंग्रेजों के बनाये कानून समाप्त कर दिये गये थे और उनके स्थान पर भारतीय कानून बना दिये गये थे? क्या ब्रिटिश न्याय व्यवस्था के स्थान पर भारतीय न्याय व्यवस्था लागू हो गयी थी? क्या अंग्रेजों द्वारा चलाई जारी रही मैकॉले की शिक्षा प्रणाली समाप्त हो कर पुनः आदर्श भारतीय गुरुकुल पद्धति चलने लगी थी? जब ऐसा कुछ भी नहीं हुआ तो यह कैसे मानें कि देश आज़ाद हो गया?

केवल सत्ता हस्तांतरण

वस्तुतः 15 अगस्त 1947 को मिली स्वतंत्रता, स्वतंत्रता नहीं, मात्र सत्ता का हस्तांतरण था। सत्ता का हस्तांतरण और स्वतंत्रता दो अलग-अलग चीजें हैं। स्वतंत्रता के बाद पुराने कानून, शासन व्यवस्था में परिवर्तन हो जाता है, जबकि सत्ता का हस्तान्तरण एक फाइल का ट्रान्सफर है और यही नाटक हुआ था 15 अगस्त 1947 को अर्धरात्रि में। हमने कह दिया कि स्वराज्य (अपने लोगों का शासन) आ गया और अंग्रेज कहते थे स्वराज्य (अपने लोगों का शासन) दिया; और उनके द्वारा किया गया भारत का विभाजन।

15 अगस्त 1947 को जब अंग्रेज भारत की सत्ता छोड़ कर जाने लगे, तो उससे पूर्व उन्होंने ऐसे हिन्दुस्तानी अंग्रेज तैयार

www.thearyasamaj.org

कर लिये थे, जो अंग्रेजी संस्कृति, अंग्रेजी समाज, वहाँ की राज्य व्यवस्था, शासन व्यवस्था, न्याय व्यवस्था और शिक्षा प्रणाली को ही सर्वश्रेष्ठ मानते थे और उन्हीं काले अंग्रेजों को यहाँ की शासन व्यवस्था, न्यायपालिका, शिक्षा व्यवस्था हस्तान्तरित कर अंग्रेज सुनिश्चित हो कर चले गए।

रजवाड़ो का विलय

भारत का विभाजन करने के साथ ही यहाँ की 565 रियासतों को आजादी दे कर भारत में बगावत के बीज भी वे बो गये थे। अंग्रेजों की योजना थी कि इससे सारे देश में बगावत हो जायेगी, रियासतें अपनी स्वतंत्र सरकारें बना लेंगीं, मुसलमान विद्रोह कर देंगे और सारे देश में अराजकता फैल जायेगी। किन्तु सरदार वल्लभ भाई पटेल के कूटनीतिक कौशल ने उनकी इन चालों को बिल्कुल विफल कर दिया और पाकिस्तान के विभाजन के बाद शेष भारत अखण्ड बना रहा।

स्वाधीनता अहिंसा से नहीं मिली

ब्रिटिश सरकार ने भारत के अहिंसक गाँधीवादियों के भय से सत्ता का यह हस्तांतरण नहीं किया था, बल्कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उन्होंने विचारा कि उपनिवेशों पर शासन अपने देश में जा कर करना न तो लाभप्रद्र है और न ही सुरक्षित। हर उपनिवेश में क्रान्तिकारी पैदा हो रहे हैं, जिनके आक्रमण का शिकार शासक अंग्रेज हो रहे हैं। इन उपनिवेशों का आर्थिक शोषण तो हम लन्दन में बैठ कर भी कर सकते हैं, जिनकी अर्थव्यवस्था हम नष्ट कर चुके हैं। अब हम भारत और इस जैसे अपने उपनिवेशों को राजनैतिक रूप से नहीं, अपितु वैचारिक व आर्थिक रूप से गुलाम बनायेंगे। इसके लिए प्रयास तो 1835 से ही प्रारम्भ कर दिए गए थे, जब से भारत की संस्कृति, अर्थव्यवस्था, न्याय व्यवस्था और शिक्षा पद्धति को कुचलना प्रारम्भ किया गया था।

शिक्षा नीति

1835 में मैकॉले द्वारा कराए गए सर्वेक्षण की रिपोर्ट में स्पष्ट था कि भारत की संस्कृति गुरुकुलों पर टिकी है, अतः सबसे पहले इन गुरुकुलों को ही नष्ट किया गया। उनके स्थान पर शिक्षा की दो प्रकार की प्रणाली लागू की गयी। भावी शासकों

www.thearyasamaj.org

और नौकरशाहों के लिए कान्वैन्ट शिक्षा प्रणाली और साधारण जनता के लिए उर्दू स्कूली शिक्षा। कान्वैंट स्कूलों के प्रचार-प्रसार का कार्य सबसे पहले अंग्रेज भक्त भारतीय राजा राममोहन राय को सौंपा गया। इन स्कूलों में मैकॉले की ऐसे भारतीय बनाने की इच्छा थी जो शरीर से तो भारतीय हों, किन्तु मस्तिष्क से अंग्रेज हों और भारतीयों से घृणा करें।

आर्थिक नीति

आर्थिक क्षेत्रों में भारतीय अर्थव्यवस्था को नष्ट करने के लिए भारत में उत्पादित माल पर अनेक प्रकार के कर लगा दिये गये और इंग्लैण्ड के बने माल को फ्री ट्रेड के अन्तर्गत कर से पूर्ण छूट दे दी गयी। जिससे भारतीय उद्योग नष्ट हो जायें तथा अंग्रेजों के उद्योग फल फूल सकें। वही कर आज भी चल रहे हैं। तो कैसे माना जाये कि देश आजाद हो गया है? भारत की न्याय व्यवस्था, जिसका आधार पंचायतें थीं, नष्ट कर वकीलों और जजों वाली जटिल और महँगी प्रक्रिया वाली अंग्रेजी न्याय व्यवस्था लागू की गयी, जो आज भी लागू है और कितना न्याय और किसको न्याय देती है, जग जाहिर है।

कांग्रेस एक सेफ्टी वाल्व

25 दिसम्बर 1885 का दिन था जब भूतपूर्व सिविल सर्विस के अंग्रेज अधिकारी अलेन ऑक्टेवियन ह्यूम ने एक मनोरंजन क्लब के रूप में कांग्रेस पार्टी की स्थापना की, जिसे अंग्रेजी शासन के लिए एक सेफ्टी वाल्व के रूप में बताया गया। कई दशक तक कांग्रेस के अध्यक्ष विदेशी रहे या एंग्लो इंडियन। सोनिया गाँधी कांग्रेस की सातवीं विदेशी मूल की अध्यक्ष हैं। कांग्रेस में जो क्रान्तिकारी विचारों का व्यक्ति आ जाता, उसे गरम दल का बता कर बाहर कर दिया जाता था। तिलक, सुभाषचन्द्र बोस इत्यादि इसी नीति के शिकार हुए। बाकी कांग्रेस का कार्य था जनसमुदाय को क्रान्तिकारियों के साथ में जाने से हटा कर अपने पीछे लगाना।

गाँधी जी आन्दोलन बीच में छोड़ देते थे

जवाहरलाल नेहरु और गाँधी जी की निष्ठा पर भी प्रश्नचिह्न है। क्या विश्व में कोई ऐसा राष्ट्र होगा, जिसके स्वतंत्रता सेनानी के वस्त्र फ्रांस में धुलते हों और आनन्द भवन जैसे

www.thearyasamaj.org

वैभवशाली व विलासितापूर्ण महल में रह कर जो क्रान्ति का संचालन करे और सरकार उसकी सम्पत्ति का हरण न करे, जबकि अन्य देशभक्त लोगों की सम्पत्ति जब्त कर उन्हें फाँसी या कालेपानी की सजा दी जाती थीं। गाँधी जी पहले तो अंग्रजों के खिलाफ आन्दोलन चलाते, फिर सफल होने से पूर्व ही उसे रोक देते। उनका कोई भी आन्दोलन अपनी पूर्णता पर नहीं पहुँचा। द्वितीय विश्व युद्ध में गाँधी जी की अंग्रेजों का साथ देने की घोषणा और आजाद हिन्द फौज का विरोध करने का जनता से आग्रह क्या यह सिद्ध करने के लिए कम है कि वह किसके सहयोगी थे? गाँधी जी की अहिंसा नीति से ब्रिटिश साम्राज्यवाद को भारी लाभ हुआ। गाँधी, नेहरु, जिन्ना, तारासिंह और अम्बेडकर अंग्रेजों के बनाये हीरो थे, ऐसा कहना शत प्रतिशत ठीक न भी हो, परन्तु इसमें सत्य का अंश अवश्य है।

पुलिस ज्यों की त्यों

कानून अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के दमन के उद्देश्य से बनाये जाते थे। वह आज भी प्रभावी है। 1860 का इंडियन पुलिस ऐक्ट, जिसमें पुलिस को सुरक्षा का अधिकार दिया गया है, किन्तु जनता को बचाव का कोई अधिकार नहीं है। वह आज भी लागू है तो कैसे मानें कि हमारा देश गुलाम नहीं है? 1864 में 'वन अधिनियम' बनाकर ग्राम के जंगल सरकार की सम्पत्ति बना दिये गये। उनके काटने का अधिकार और उस पर सरकार का अधिकार भी 15 अगस्त 47 के बाद नहीं बदला गया। बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि इंग्लैंड की रानी आज भी भारत की नागरिक हैं, और उसे भारत आने पर पासपोर्ट, वीजा की आवश्यकता नहीं है। ऐसा क्यों? इंडियन सिटीजन ऐक्ट 1891 के, जो कि आज भी लागू है, अनुसार कोई भी ब्रिटेन का व्यक्ति भारत का नागरिक हो सकता है।

भारत ब्रिटेन का उपनिवेश

क्या आज भी भारत ब्रिटेन का उपनिवेश है? इसका उत्तर जानने के लिए एक कानून 'इंडियन इंडिपैंडेंस ऐक्ट 1946 को पढ़ लीजिए। आपकी आँखें खुल जायेंगी। इसे 1946 में इंग्लैण्ड में पारित करने के पश्चात् बाकायदा कानून बना कर अंग्रेजों

www.thearyasamaj.org

ने, भारत और पाकिस्तान के रूप में भारत का बँटवारा किया था। इस कानून में लिखा है भारत और पाकिस्तान दो डोमिनियन स्टेट बनेंगे। डोमिनियन स्टेट का अर्थ होता है, एक बड़े स्टेट के अधीन एक छोटा राज्य, न कि स्वतंत्र राज्य। हम किसके डोमिनियन स्टेट हैं? हिजहाइनैस के। भारत को कॉमनवैल्थ में प्रवेश ब्रिटिश डोमिनियन के रूप में मिला है न कि इण्डियन रिपब्लिक के रूप में।

क्रान्ति नहीं हुई

अगर वास्तव में 15 अगस्त 1947 को आजादी आयी, तो इसके बाद एक रक्तहीन क्रान्ति देश में हो जानी चाहिए थी। जिन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन और क्रान्ति का मार्ग अपनाया था, उन्हें चुन-चुन कर सरकारी पदों पर बैठाया जाना चाहिए था, पर नहीं बैठाया गया। इस स्वतंत्रता के बाद भी भारत का गवर्नर जनरल बनाने के लिए पंडित नेहरु को कोई भारतीय नहीं मिला। मिला तो वही लार्ड माउंटबेटन। उन नौकरशाहों के ये कुलीन वंशज, जो अंग्रेजों के शासन काल में स्वतंत्रता समर्थकों का दमन करते थे, सत्ता के इस परिवर्तन के बाद भी अपने पदों पर रहे।

इसी पश्चिमी संस्कृति और सभ्यता से प्रभावित टैगोर परिवार था। इसी परिवार के रवीन्द्रनाथ टैगोर ने सन् 1911 में जार्ज पंचम के स्वागत में 'जन गण मन अधिनायक' नामक गीत गाया। वही गीत 15 अगस्त 194' के पश्चात् राष्ट्रीय गीत बना कर गाया जाता है। बड़ी शर्म की बात है।

उपरिलिखित परिस्थितियों के अनुसार मेरा तो मानना है कि इस देश में 15 अगस्त 1947 को अभीष्ट स्वतंत्रता हमें प्राप्त नहीं हुई। ये देश आज भी उतना ही गुलाम है, जितना कि अंग्रेजों के समय में था, बल्कि उससे भी अधिक गुलाम हो गया है। मेरी इस मान्यता को बल मिला है बढ़ती हुई विदेशी कम्पनियों की गुलामी, टूटता हुआ समाज, शक्तिहीन समाज, बढ़ती हुई गरीबी और बेरोजगारी को देख कर।

कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, जि. जे. पी. नगर
(उत्तरप्रदेश)

www.thearyasamaj.org

संस्कृत के प्रति शिक्षण संस्थाओं का कर्तव्य

(संस्कृत दिवस श्रावणी पर)

–डॉ. कृष्णलाल (पूर्व आचार्य संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)

चार अक्टूबर 1947 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने संस्कृत के पक्ष में निर्णय देते हुए इसे दसवीं कक्षा तक त्रिभाषा सूत्र में सम्मिलित किये जाने का विशेष आग्रह किया था। यद्यपि संस्कृत का महत्त्व सुविदित है तथापि सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय में से कुछ उद्धरण देकर एक बार फिर उन न्यायधीशों की दृष्टि में संस्कृत के महत्त्व को समझना हमारे लिए, विशेष रूप से शिक्षण संस्थाओं के लिए, आवश्यक है।

"केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर अपने शान्त कक्ष में अध्ययनरत बैठे हुए हैं। तभी एक उत्तेजित अंग्रेज सैनिक उनके अध्ययन–कक्ष में प्रवेश करता है और प्रोफेसर पर आरोप लगाता है कि वे युद्ध के कठिन काल में उनका साथ नहीं दे रहे हैं, जबकि वह अपने अन्य साथियों के साथ जर्मनी से जूझ रहा है। प्रोफेसर शान्त–भाव से उस नौजवान सैनिक से पूछते हैं कि आखिर वह किसकी खातिर लड़ाई कर रहा है तत्काल जवाब मिलता है कि वह देश की रक्षा के लिए युद्ध कर रहा है। विद्वान् प्रोफेसर पूछते हैं कि क्या है वह देश जिसकी रक्षा में वह सैनिक अपना खून बहाने को तैयार है। सैनिक बताता है कि देश में उसका तात्पर्य भौगोलिक सीमा और उसमें बसने वाले जनसमूह से है और अधिक पूछने पर सैनिक कहता है कि वह केवल "भूमि" एवं "जन" को ही नहीं वरन् द्रेश की संस्कृति को भी बचाना चाहता है। तब प्रोफेसर शान्त–भाव से उसे समझाते हैं कि वे उसी संस्कृति को पुष्ट करने में अपना योगदान दे रहे हैं। सैनिक का पारा उतरता है और वह उस प्रोफेसर के सम्मान में झुकते हुए प्रतिज्ञा करता है कि अब आगे ये वह और भी अधिक ऊर्जा के साथ अपने देश में सांस्कृतिक विरासत की रक्षा हेतु लड़ेगा।"

"हमारी संस्कृति की धारा सूख ही जायेगी यदि हम संस्कृत के अध्ययन को हतोत्साहित करते रहेंगे। भारतीय भाषाओं के संवर्धन एवं विकास में संस्कृत की विशेष महत्त्वपूर्ण भूमिका तथा देश की सांस्कृतिक एकता में इसके अप्रतिम योगदान को देखते हुए विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तरों पर इसकी पढ़ाई की व्यवस्था और भी अधिक व्यापक आधार पर की जानी चाहिए।"

www.thearyasamaj.org

"संस्कृत विश्व की अति महान् भाषाओं में से एक है और यह न केवल भारत बल्कि एशिया महाद्वीप के एक बड़े भू-भाग की श्रेष्ठतम प्राचीन भाषा है।"

"पं. जवाहरलाल नेहरु ने संस्कृत के महत्व को निम्न शब्दों में प्रकट किया है-

"यदि मुझसे पूछा जाए कि भारत का श्रेष्ठतम खजाना क्या है और उसकी सर्वोत्तम विरासत क्या है, तो मैं बेहिचक उत्तर दूँगा कि वह संस्कृत भाषा और संस्कृत साहित्य ही है तथा वह सब कुछ है जो इसमें निहित है। यह हमारी सबसे महान् थाती है और जब तक यह सुरक्षित है तथा जब तक हमारे लोगों के जीवन को प्रभावित करती रहेगी और तब तक भारत की मूलभूत प्रतिभा जीवित रहेगी।"

"भारतीय जन संस्कृत को इस महान् देश के विभिन्न प्रकार के लोगों को एकता के सूत्र में बाँधने वाली शक्ति के रूप में देखते हैं।"

इन उद्धरणों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण संस्थाओं को अपने विद्यालयों में संस्कृत के समुचित प्रचार-प्रसार पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। सभी शिक्षण संस्थाओं में त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत दसवीं कक्षा तक संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाना चाहिए। इससे भी एक कदम आगे बढ़ कर ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षाओं में भी सभी विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए।

एक बात की ओर ध्यान दिया जाना और आवश्यक है। (विद्यालयों में पाँचवीं या छठी से सातवीं कक्षाओं तक संस्कृत को प्रति सप्ताह केवल दो या तीन पीरियड दिये जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि आगे की कक्षाओं में छात्रों को बहुत कठिनाई का अनुभव होता है। संस्कृत में पाठ्य-पुस्तक पढ़ने और समझने के साथ-साथ व्याकरण, निबन्ध और अनुवाद का अभ्यास अत्यन्त आवश्यक है। इस अभ्यास के लिए अधिक समय अपेक्षित है। इसे एक विडम्बना ही कहा जायेगा कि पहली कक्षा में पढ़ाई जा रही भाषाओं (हिन्दी और अंग्रेजी) को इन कक्षाओं में सप्ताह में छः पीरियड दिये जाते हैं। उसी प्रकार संस्कृत को भी उनके समान ही पीरियड दिये जाने चाहिए। इस प्रकार हम संस्कृत के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह करेंगे।

विश्वनीड, ई-937,सरस्वती विहार, दिल्ली-34

www.thearyasamaj.org

लीला पुरुषोत्तम कर्मयोगी श्रीकृष्ण

(कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर)

-आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार

कृष्ण, कृषक, किशन, किसान एक ही शब्द है, केवल अपभ्रंश होता गया है। कृषि प्रधान देश भारत में कृष्ण की पूजा स्वाभाविक थी।

गोकुल में गोपाल

अच्छे कृषक के लिए गोपाल होना परम आवश्यक है। बिना गोपालन के अच्छी कृषि नहीं होगी; बिना कृषि के गोपालन माँसाहार को प्रोत्साहन देगा, जैसा कि यूरोप में हो रहा है। कृष्ण कथा कुछ सत्य घटनाओं को आलंकारिक रीति से सँवार कर अत्यन्त रोचक, मार्मिक और आह्लादजनक रूप में प्रस्तुत की गई हैं। कृष्ण उस कृषक वर्ग के प्रतिनिधि हैं, जो निरंकुश शासकों के हाथों उत्पीड़न का शिकार होता रहा है।

जन्म कारागृह में

कृष्ण का जन्म कारावास में हुआ था। उनका जानलेवा शत्रु उनके जन्म से पहले ही उन्हें मार डालने के लिए पक्का निश्चय किये बैठा था। उनके सात अग्रजों को जन्मते ही मार चुका था। अत्याचारी में माया, ममता, मानवता नहीं होती। परन्तु सृष्टि कंसों के चलाये नहीं चल रहीं। कृष्ण के बच निकलने का उपाय निकल आया है। जेल से निकाल कर उनके पिता वसुदेव उन्हें रातों-रात गोकुल पहुँचा देते हैं। यह तभी संभव हुआ होगा, जब कंस ने वेतनभोगी सेवकों में से कुछ उसके घिनौने आचरण से क्षुब्ध हो कर वसुदेव के साथ मिल गये होंगे।

शैशव प्रकृति की गोद में

गोकुल में कृष्ण का शैशव और बालपन विकास के लिए आदर्श परिस्थितियों में बीता। गौएँ चराना, दूध पीना, व्यायाम करना और बाँसुरी बजाना। समय-असमय कुछ कष्ट भी आ पड़ते थे। साँप निकलते थे, उन्हें मारना पड़ता था। कोई बैल मरखना हो जाता था, उसे वश में करना होता था। आजकल की भांति अनेक नर रूपधारी राक्षस और राक्षसियाँ लोगों को सताते थे। उनके दमन में पहलवान कृष्ण और बलराम सदा आगे रहते थे। शीघ्र ही उनकी ख्याति मुरारि (मूरा का दमन

www.thearyasamaj.org

करने वाले शत्रु) के रूप में फैल गई। 'मूर' अफ्रीका के मोरक्को प्रदेश से आये दुष्ट प्रकृति के लोग थे, जिन्होंने परवर्ती काल में यूरोप तक पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया था।

कुंठा रहित समाज

कृष्ण और उनके साथी गोप गोपियाँ जिस प्राकृतिक सात्विक समाज में रहते थे, उसमें कुंठाएँ नहीं थी। सब एक दूसरे से परिचित पडोसी थे। मद्यपान का प्रचलन गोकुल में नहीं था। इसलिए वे जिस प्रकार हिलमिल कर रहते थे, युवक-युवतियों में सहज स्नेह सम्बन्ध होता था, उसकी कल्पना आज हमारे लिए सरल नहीं है। परन्तु वह आदर्श सुखी समाज था। वे हँसते थे, खेलते थे, गाते थे, नाचते थे, किन्तु कोई अत्याचार या बलात्कार नहीं था। हर कोई दूसरे के लिए प्राण देने को तैयार था। अपने सुख के लिए दूसरे को सताने की कोई सोच भी नहीं सकता था।

कृष्ण किशोर हो गये; युवा हो गये। गोकुल के हृदय सम्राट् बन गये। हृष्ट-पुष्ट और निर्भीक यादव युवक उनके सहचर-अनुचर बन गये। सभी तरुणियों के वह स्नेह भाजन थे, जैसे कि बलिदानी वीर सभी देशों और कालों में युवतियों के स्नेहभाजन होते रहे हैं।

अपने बाहुबल से विजय

तभी उनकी ख्याति या कुख्याति कंस के कानों तक जा पहुँची। उसने उन्हें मथुरा बुलवा भेजा। निर्णायक क्षण आ पहुँचा था। इससे उन्हें अकेले ही निपटना था। जैसे शिवाजी ने अकेले ही अफजल खाँ से मल्लयुद्ध करके, जीवन मरण की बाजी लगा कर विजय प्राप्त की थी, वैसे ही उससे हजारों साल पहले कृष्ण ने अपने बाहुबल से कंस के पाले हुए पहलवानों का वध करके कंस को मार डाला। अपने माता-पिता देवकी और वसुदेव को कारागार से छुड़ाया। वह अपने पिता को भी राजा बना सकते थे, परन्तु नीतिनिपुण होने के कारण उन्होंने कंस के पिता उग्रसेन को ही व्रजभूमि का राजा बना दिया।

राज्य का लोभ नहीं

कृष्ण का कर्मयोग यहीं से शुरू हो जाता है। अत्याचारी राजा

www.thearyasamaj.org

को मारा, पर उसका राज्य खुद न संभाला। राजा देर-सवेर में अप्रिय हो ही जाता है।

कंस अकेला नहीं था। कई शक्तिशाली राजा उसके समर्थक थे। उन सबसे निपटने में कृष्ण के कई वर्ष बीते। उन्हें मथुरा छोड़ कर द्वारिका चले जाना पड़ा। इतना बड़ा पलायन भारत के इतिहास में और किसी ने नहीं किया। यही कृष्ण की विजय का आधार है।

दुर्बल का साथ

द्वारिका में सुरक्षित जा बैठने के बाद कृष्ण महाभारत की राजनीति में कूद पड़े। वहाँ पाँडव और कौरव राजसत्ता पर अधिकार करने के लिए जूझ रहे थे। पांडवों का पलड़ा हल्का था। सत्ता धृतराष्ट्र के हाथों में थी। कृष्ण ने दुर्बल पक्ष का साथ दिया।

भीष्म, द्रोण, और विदुर बहुत समय से धृतराष्ट्र के पीछे पड़े थे कि पांडवों को राज्य का कुछ हिस्सा दे दो, जिससे कुछ न्याय तो होता दिखाई पड़े। रोज की चखचख से बचने के लिए धृतराष्ट्र ने उन्हें हिंडन के पश्चिम से इन्द्रप्रस्थ का इलाका दे दिया। यहाँ बीहड़ जंगल और अरावली की चट्टानी पहाड़ियाँ थीं, जिनमें खेती नहीं होती थी। पांडवों ने इस क्षेत्र को सुधारा। जंगल जला कर खेत बनाये और यमुना के पश्चिमी तट पर सुन्दर शहर इन्द्रप्रस्थ बसाया, जो आज दिल्ली कहलाता है। उस समय पूरे भारत में यह सबसे नया और सबसे सुन्दर शहर था।

उसके बाद पांडवों ने दूर-दूर तक के प्रदेश जीत कर राजसूय यज्ञ किया। कृष्ण क्या थे, यह तब पता चला, जब उस राजसूय यज्ञ में उपस्थित सभी नरेशों में से किसी एक की अग्रपूजा करने का प्रश्न उठा। आयु और अनुभव में सबसे बड़े भीष्म थे। युधिष्ठिर के पूछने पर उन्होंने कहाः 'इस राजाओं के समुदाय में सबसे अधिक पूजनीय वासुदेव कृष्ण ही हैं। उन्हीं की अग्रपूजा करो।'

शिशुपाल का वध

कृष्ण की अग्रपूजा हुई। पर उस उच्चतम सम्मान के साथ ही घोरतम अपमान भी आ जुड़ा। कृष्ण के मौसेरे भाई शिशुपाल ने सबके सामने कहना शुरू किया : 'यह कृष्ण तो मामूली

www.thearyasamaj.org

ग्वाला है; राजा भी नहीं है। विद्वान् भी नहीं है; वयोवृद्ध भी नहीं है। फिर इसकी अग्रपूजा क्यों की गई? यह तो बाकी सब बड़े राजाओं का अपमान है।'

युधिष्ठिर, भीष्म आदि ने उसे समझाने की बहुत चेष्टा की, परन्तु वह अधिकाधिक विफरता ही गया। अन्त में स्वयं कृष्ण ने कहा : 'मैंने अपनी मौसी को वचन दिया था कि मैं इसके सौ अपराध क्षमा कर दूँगा, पर इसके बाद नहीं। अब शिशुपाल उस सीमा को लाँघ गया है।' यह कहते हुए उन्होंने अपने चक्र से शिशुपाल का सिर काट दिया। फिर किसी ने चूँ नहीं की।

नारी गरिमा की रक्षा

जब द्यूतसभा में युधिष्ठिर अपना राज्य, अपने चारों भाइयों और द्रोपदी तक को हार गये और दुर्योधन ने सारी मर्यादाओं को तिलांजलि दे कर द्रौपदी को भरी सभा में नंगा करना चाहा, और भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य और विदुर जैसे धर्मवेत्ता संशय में पड़े रहे कि दुर्योधन का आचरण धर्मानुकुल है या नहीं, तब अकेले कृष्ण की गरिमा सदा रक्षणीय है। उन्होंने द्रौपदी को निवस्त्र होने से बचाया। दुर्योधन के हाथ कलंक और पांडवों के प्राणान्तक वैर के सिवाय कुछ नहीं लगा। चीरहरण की घटना के बाद कृष्ण पांडवों के और निकट आ गये। हर विपत्ति में वह उनकी सहायता करते रहे, उचित परामर्श देते रहे और सबसे बढ़ कर उनका हौसला बनाये रहे।

संधि के लिए भरसक यत्न

पांडवों का वनवास और अज्ञातवास समाप्त हुआ। अब उन्हें अपना राज्य वापस मिल जाना चाहिए था। दुर्योधन राज्य लौटाने को तैयार नहीं था। कृष्ण ने भरसक यत्न किया कि कोई समझौता हो जाये और विनाशकारी युद्ध न हो। वह स्वयं भारी जोखिम उठा कर हस्तिनापुर की राजसभा में पांडवों के दूत बन कर गये। पर बात बनी नहीं। दुर्योधन ने उन्हें ही बन्दी बना लेना चाहा। पर बना नहीं सका।

उधर युधिष्ठिर को वैराग्य के दौरे आते थे : 'राज्य के लिए अपने ही भाइयों से क्यों लड़ना? भीख माँग कर भी तो पेट भरा जा सकता है।' उन्हें समझाना पड़ता था कि यह धर्म नहीं है।

www.thearyasamaj.org

गीता का उपदेश

उससे भी बड़ा दौरा अर्जुन को पड़ा, जब उसने रणभूमि में खड़े होकर देखा कि उसे अपने दादा भीष्म और पिता से भी प्रिय गुरु द्रोणाचार्य पर बाण चलाने होंगे। गीता का लम्बा और महान उपदेश देकर कृष्ण ने उसका मोहभाव दूर किया। उन्होंने कहा: 'जीतने के लिए मत लड़ो। अन्याय के विरुद्ध लड़ना हर व्यक्ति का धर्म है। उस धर्म के पालन के लिए लड़ो। विनाश से मत डरो। विनाश तो देर सवेर में सबका होना ही है। यदि तुम नहीं भी मारो, तो भी इन योद्धाओं में से कोई भी सदा जीने वाला नहीं है। सबके मौत के परवाने कट चुके हैं।

निःस्वार्थ कर्म

महाभारत युद्ध के प्रेरक कृष्ण थे। परन्तु उसमें उनका स्वार्थ कुछ भी नहीं था। जीतने के बाद उन्हें राजा नहीं बनना था। परन्तु जिसे वह उचित समझते थे, उसके पोषण के लिए भरसक चेष्टा करना वह कर्तव्य मानते थे। यही कर्मयोग है- फल की इच्छाके बिना कर्तव्य का पालन करना।

कहा जा सकता है कि कृष्ण ने सफल जीवन् जिया। वह योगी थे, परन्तु उनका योग स्त्री दर्शन मात्र से खंडित नहीं होता था। वह राजनेता थे, परन्तु राजपद में उनकी आसक्ति नहीं थी। शासन उन्होंने कभी किया ही नहीं। वह तो केवल गुरु थे- मार्गदर्शक; गांडीवधारी अर्जुन के सारथी।

ऐसा गुरु आज भारत को मिल जाये, तो उसे पाकिस्तानी आतंकवाद से मुक्ति मिले। आखिर तब भी अश्वत्थामा के पास ब्रह्मास्त्र (परमाणु बम) था ही। परन्तु उस सबसे रत्ती भी भयभीत हुए बिना कृष्ण ने पांडवों के धर्म के (विजय के) मार्ग पर अडिग कदमों से चलाया, यही कृष्ण का कृष्णत्व है। वृन्दावन में मुरली बजाने वाला कृष्ण कुरुक्षेत्र में पांचजन्य भी उसी ठाठ से बजाता था। यही लीलामय की लीला है।

नमो वासुदेवाय कृष्णाय!

आर्य वानप्रस्थाश्रम,
ज्वालापुर रोड, हरिद्वार

www.thearyasamaj.org

हंटर कमीशन से लेकर सच्चर कमीशन तक एक-सा षड्यंत्र

(मुसलमानों की अलग पहचान बनाने की नई कोशिश)

केन्द्र सरकार द्वारा स्थापित सच्चर समिति एक प्रकार से हंटर समिति की निरन्तरता में ही देखी जानी चाहिए। ब्रिटिश सरकार ने हंटर समिति की स्थापना इसलिए ही की थी ताकि भारत में रह रहे मुसलमानों की अलग पहचान स्थापित की जा सके और उन्हें देश की मुख्य सांस्कृतिक धारा से जोड़ा जा सके। इस देश के मुसलमान ज्यादातर हिन्दुओं से ही मतान्तरित हुए हैं। परन्तु इतना तो निश्चित है कि मतान्तरण से वे कटे नहीं होंगे। परन्तु जब इस देश में अंग्रेज आये तो उनके सामने मुख्य प्रश्न मुसलमानों की इस विशाल आबादी को देश की लोकधारा से काटकर उसमें अलगाव की भावना पैदा करना था। अंग्रेजों की नीति मतान्तरण से भी आगे राष्ट्रान्तरण की थी। इसके लिए हंटर समिति का गठन किया ताकि यह स्थापित किया जा सके कि मुसलमान इस देश के निवासियों से अलग पहचान रखते हैं, उनकी समस्याएँ भी सामान्य जन की समस्याओं से अलग हैं और उनका इतिहास व विरासत भी इस देश के इतिहास और विरासत से अलग है। हंटर समिति ने इस दिशा में कई सिफारिशें की दरअसल 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद अंग्रेजों के लिए इस नीति को बढ़ावा देना और भी जरूरी था। अंग्रेजों ने स्वयं तो इसके लिए प्रयास किये ही लेकिन उन्हें इन प्रयासों में मदद देने के लिए मुस्लिम समाज से भी कुछ लोग मिल गए। लेकिन इस क़ाम को आगे बढ़ाने के लिए जरूरी था कि हिन्दू समाज से भी कुछ लोग उनके इस थीसिज को आगे बढ़ाते। इतिहास गवाह है कि इस क्षेत्र में भी उन्हें कमी न दिखाई दी। दरअसल हर काल में शासक वर्ग को अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए चारण और भाट मिल ही जाते हैं। हंटर समिति से लेकर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय तक की स्थापना इसका प्रमाण है।

दुर्भाग्य से शासक बदल गए परन्तु शासक के भीतर की मानसिकता नहीं बदली। इसीलिए वर्तमान सरकार ने भी हंटर समिति की निरन्तरता में इतने वर्षों बाद राजेन्द्र सच्चर समिति

www.thearyasamaj.org

बनाकर उसे वही कार्य सौंपा जो ब्रिटिश शासकों ने हंटर को सौंपा था। सच्चर ने वह कार्य बखूबी निभाया है। किसी को ताज़्जुब नहीं करना चाहिए, सरकार ने सच्चर समिति की रिपोट आने के बाद देश में जगह-जगह अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के परिसर के निर्माण प्रारंभ कर दिये। सर सैयद अहमद खान को कम से कम इस बात का श्रेय तो देना चाहिए कि उन्होंने अलीगढ़ विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए धन मुस्लिम समाज से ही एकत्रित किया था या फिर उन लोगों से जो भारत को तोड़ने में पहला पग मानते थे। वर्तमान सरकार तो देश के लोगों की गाढ़े खून-पसीने की कमाई से प्राप्त कर राशि का प्रयोग कर मुस्लिम विश्वविद्यालय के परिसर देशभर में स्थापित कर रही है।

सच्चर समिति ने देशभर में घूमकर मुसलमानों को यह समझाने का प्रयास किया कि इस देश में उनके साथ बहुत अन्याय हो रहा है। उनके अधिकारों का हनन हो रहा है। इस देश के निवासियों को मिलने वाली सुविधाओं से उन्हें वंचित रखा जा रहा है। सरकारी नौकरियों में उन्हें उचित स्थान नहीं दिया जा रहा है। उनकी गरीबी का उत्तरदायित्व इस देश के लोगों पर ही है। सच्चर समिति की हिमाकत की हद तो तब हो गई जब उसने सेना तक के मुसलमानों की गिनती करनी शुरु कर दी। सच्चर महोदय की सिफारिशें साफ और स्पष्ट हैं। इस देश के मुसलमानों की पहचान अलग है। वे इस देश में अल्पसंख्यक हैं। इसलिए इनकी जनसंख्या के हिसाब से इनका हिस्सा दे देना चाहिए। यही तर्क मुहम्मद अली जिन्ना देते थे। लेकिन उस वक्त शासक इंग्लैण्ड की सरकार थी इसीलिए उस सरकार ने जिन्ना की यह माँग स्वीकार कर ली और मुसलमानों को इनका हिस्सा पाकिस्तान दे दिया। हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार फणीश्वर नाथ रेणु ने अपनी कृति 'मैला आँचल' में इसे भैयारी बाँट कहा है। लगता है अब सरकार सच्चर को आगे करके एक और भैयारी बाँट की तैयारी कर रही है। सिफारिशों के अनुरूप कुछ राज्य सरकारों ने मुसलमानों को मजहबी आधार पर आरक्षण देना प्रारम्भ कर दिया है। जाहिर है सच्चर समिति की सिफारिशें भारतीय संविधान से टकराती हैं। क्योंकि भारतीय संविधान मजहब के

www.thearyasamaj.org

आधार पर आरक्षण की अनुमति नहीं देता। वैसे भी सरकार किसी एक सम्प्रदाय अथवा पंथ के साथ अलग व्यवहार कैसे कर सकती है? सच्चर जैसे लोगों के लिए इसका भी रास्ता है। उन्होंने विभिन्न विचार गोष्ठियों में यह माँग करनी शुरु कर दी है कि संविधान में उचित संशोधन किया जाए। हो सकता है कल सच्चर जैसे लोग यह भी कहना शुरु कर दें कि अंग्रेजों के जाने से पहले संसद में मुसलमानों के लिए आरक्षित सीटों का प्रावधान था, उसी आधार पर पुनः व्यवस्था की जाए। सच्चर सिफारिशें देने के बाद चुप नहीं बैठे। वे बाकायदा देशभर में घूम-घूम कर अल्पसंख्यकों यानि मुसलमानों को ललकार रहे हैं कि उनको अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए लम्बा संघर्ष करना पड़ेगा। 9 जुलाई को उन्होंने दिल्ली के कॉंस्टीच्यूशन क्लब में यह बात दोहराई। जाहिर है कि सब के पीछे सरकार के वे लोग होंगे जो एक बार फिर भारत की भैयारी बाँट की तैयारी कर रहे हैं। भारत की समस्या सच्चर समिति नहीं है, बल्कि उसके पीछे की ताकतें हैं, जो भारत को कमजोर करना चाहती हैं। उनकी शिनाख्त करना बहुत जरूरी है।

ब्रिटेन का कहना है कि जितने भी लोग यहाँ आतंकवादी घटनाओं में शामिल होते हैं, उनमें अधिकांश पाकिस्तान मूल के मुस्लिम होते हैं। यानी सीधी सी बात है-वे ब्रिटेन में जन्में मुस्लिम हैं जिनके लिए ब्रिटेन ही उनकी मातृभूमि रही जहाँ उन्होंने जन्म लिया, जहाँ की स्वतंत्रता और सुविधाओं का उपभोग करते हुए अपने व्यक्तित्व और भविष्य को निखारने के समान अवसर प्राप्त किए और वहाँ वे इसलिए रहे क्योंकि वहाँ रहना उन्हें पाकिस्तान से ज्यादा आरामदेह लग रहा था। पर जिस ब्रिटिश भूमि ने उनको इतना सब दिया, जो ब्रिटिश भूमि उनके लिए मातृभूमि बनी उसी मातृभूमि का नमक उन्होंने कैसे अदा किया? यह वह प्रश्न है जो लोगों को मथता है और इस सवाल का जवाब आसान भी है लेकिन उसके विस्तार में जाना संभवतः मुस्लिम समाज को अभी कठिन महसूस होगा।

www.thearyasamaj.org

योग एक जीवन दर्शन

–स्वामी रामदेव

'योग' एक जीवन दर्शन है, योग आत्मानुशासन है, योग एक जीवन पद्धति है, योग व्याधिमुक्त व समाधियुक्त जीवन की संकल्पना है। योग आत्मोपचार एवं आत्मदर्शन की श्रेष्ठ आध्यात्मिक विद्या है। योग व्यक्तित्व को वामन से विराट बनाता है या समग्र रूप से स्वयं को रूपान्तरित विकसित करता है। योग एकमात्र वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति नहीं अपितु योग का प्रयोग परिणामों पर आधारित एक ऐसा उपचार है जो व्याधि को निर्मूल करता है अतः यह एक सत्पूर्ण विधा है जो शरीर के रोगों का ही नहीं बल्कि मानस रोगों का भी चिकित्सा शास्त्र है।

योग ऐलोपैथी की तरह कोई लाक्षणिक चिकित्सा नहीं अपितु रोगों के मूल कारण को निर्मूल कर हमें भीतर से स्वस्थता प्रदान करता है। योग को मात्र एक व्यायाम की तरह देखना संकीर्णतापूर्ण, अविवेकी दृष्टिकोण है। स्वार्थ, आग्रह एवं अज्ञान से ऊपर उठकर योग को हमें एक विज्ञान की तरह देखना चाहिए।

योग की पौराणिक मान्यता है कि इससे अष्टचक्र जागृत होते हैं एवं प्राणायाम के निरंतर अभ्यास से जन्म-जन्मान्तर के संचित अशुभ संस्कार व पाप क्षीण होते हैं।

हमने अष्टचक्रों की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि का जब अन्वेषण किया एवं प्राचीन सांस्कृतिक शब्दों का जब अर्वाचीन चिकित्सा विज्ञान के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया तो पाया कि मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, हृदय, अनाहत, आज्ञा, एवं सहस्त्रार चक्र क्रमशः Reproductory, Excretroy, Digestive, Skeletal, Circulatory, Respiratory, Nervus एवं Endocrine System हैं। क्रियात्मक योगाभ्यास के सात प्राणायाम इन्हीं अष्टचक्रों अथवा आठ Systems को सक्रिय एवं संतुलित बनाते हैं।

एक-एक System के असन्तुलन से अनेक प्रकार की व्याधियाँ या विकार उत्पन्न होते हैं। भाषा कुछ भी हो भाव विज्ञान एवं अध्यात्म का एक ही तात्पर्य है भाषा तो मात्र

www.thearyasamaj.org

भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है लेकिन चार सौ वर्षों की गुलामी की आत्मग्लानि के दौर से हम कुछ ऐसे गुजरे कि हमें वात, पित्त व कफ की बजाय Anabolism, Catabolism, Metabolism ठीक से समझ आने लगा।

अपनी परम्परा, संस्कृति के ज्ञान को हम अज्ञानवश आत्मगौरव के रूप में न देखकर आत्मग्लानि से भर गये। 'चक्र' पढ़कर चक्कर में पड़ गये परन्तु System शब्द को पढ़कर हम अपने आपको Systematic कहने लग गये जबकि प्राचीन ज्ञान व अर्वाचीन ज्ञान का तात्पर्य एक ही था। **प्रज्ञापराधो हि सर्वरोगाणां मूलकारणम्** (चरक) के आयुर्वेदोक्त सिद्धान्त के बजाय Stress is the main casuse of all diseases हमें अधिक वैज्ञानिक लगने लगा। अब तो आग्रह एवं अज्ञान छोड़ो एवं सत्य से नाता जोड़ो। उदाहरण के लिए Endocrine System के असन्तुलन से तनाव जनित हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, अवसाद, मोटापा व मधुमेह आदि अनेक जटिल रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसी तरह से स्कैलेटल सिस्टम के असंतुलन से शताधिक प्रकार का (सौ से अधिक प्रकार का) तो आर्थराइटिस होता है एवं मांसपेशियों की विकृतियों का व्यक्ति शिकार हो जाता है। कहने का तात्पर्य है कि आन्तरिक सिस्टम में आया किसी भी तरह का असंतुलन ही रोग है जबकि भीतर का संतुलन ही आरोग्य है।

लाखों-करोड़ों लोगों पर योग के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रयोग से हमने ये पाया है कि मुख्यतः आठ प्राणायामों के विधिपूर्वक एक सुनिश्चित समय एवं संकल्पबद्ध अभ्यास से हमारे आठों चक्र या आठों सिस्टम पूरी तरह से संतुलित हो जाते हैं। परिणामतः हम एक निरामय जीवन योग से पाते हैं। साथ ही हम दवा के रूप में जो कैमिकल साल्ट या हार्मोन बाहर से ले रहे थे धीरे-धीरे उसकी आवश्यकता नहीं रह जाती क्योंकि जो हम बाहर से ले रहे थे वो सारे कैमिकल साल्ट या हार्मोन्स हमें भीतर से ही प्राप्त हो जाते हैं।

योग एलोपैथी की तरह एक पिजन होल ट्रीटमेन्ट (सीमित चिकित्सा) न होकर आरोग्य की एक सम्पूर्ण संकल्पना है। आपातकालीन चिकित्सा व शल्य चिकित्सा को छोड़कर शेष चिकित्सा के सभी क्षेत्रों में योग एक श्रेष्ठतम चिकित्सा

www.thearyasamaj.org

विधा है। योग के साथ कुछ जटिल रोगों में यदि आयुर्वेद का भी संयुक्त प्रयोग होता है तो उपचार का असर अत्यधिक प्रभावी हो जाता है।

उक्त आरोग्य पक्ष के साथ-साथ योग का आध्यात्मिक पक्ष बहुत ही विराट है। यद्यपि योग का मुख्य लक्ष्य समाधि की प्राप्ति या स्व रूप की उपलब्धि या परम सत्य का साक्षात्कार है। साथ ही योग से समाधि की प्राप्ति की इस यात्रा में बीच के अवरोधक रोग तो स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं अर्थात् योग से व्याधि की परिसमाप्ति तो योग का बायो प्रोडक्ट है। मुख्य लक्ष्य तो समाधि ही है, यह हमें कभी भी नहीं भूलना चाहिए। योग के बारे में ये विचार मात्र बौद्धिक व्यायाम नहीं, कोई सपना, प्रलोभन या आश्वासन नहीं अपितु योग के प्रयोग का यथार्थ है। मैं आश्वस्त हूँ कि आगे आने वाले समय में विश्व साग्रह योग को आत्मसात् करेगा और योग से एक शान्त, स्वस्थ संवेदनशील व समृद्ध राष्ट्र व विश्व का निर्माण होगा। साइंस एंड स्पिरिच्युएलिटी, भौतिकवाद व अध्यात्मवाद के समन्वय से पूर्ण विकास होगा। योग से आत्मधर्म व राष्ट्रधर्म जगेगा। आत्मकल्याण व विश्व कल्याण के पथ पर विश्व आगे बढ़ेगा। जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद, मार्क्सवाद, माओवाद व मनुवाद आदि वादों के विवाद से निकलकर व्यक्ति राष्ट्रवाद व मानवतावाद को स्वीकार करेगा। और भारत विश्व की सर्वोच्च सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक व सामाजिक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठापित होगा। अशान्ति में भय, घृणा, तृष्णा, असंतोष, अविवेक, क्रोध, असंयम एवं समस्त वासनात्मक भाव उत्पन्न होते हैं। प्राणायाम एवं ध्यान से जब व्यक्ति का मन शांत हो जायेगा तो समाज, राष्ट्र व विश्व में व्याप्त भय, भ्रम, हिंसा, अपराध व भ्रष्टाचार भी मिट जायेगा और उपासना की वृत्ति से वासना की प्रवृत्ति पर भी नियन्त्रण लगेगा। भोगवादी विद्रूपताओं से मुक्ति का एकमात्र समाधान यही भोगवादी, दृष्टिकोण है। हिंसा, अपराध ा व कामोन्मत्तता के वैश्वीकरण के विकराल काल का अन्त योग की वैश्विक प्रतिष्ठापना से ही सम्भव है, अन्यथा महाविमाश से कोई बचा नहीं सकता।

www.thearyasamaj.org

The Power Of One

Satish Prakash, PhD, Vyakaranacharya
Founder-Acharya, Maharshi Dayananda Gurukula

Eka eva agnir bahudhaa samiddha
Eka sooryo vishwam anu prabhoota
Eka eva ushaa sarvam idam vibhaati
Ekam waa idam vi babhoowa sarvam – Rig Veda 8:58:2

Fire is one but it is kindled in various ways. The sun is one and, alone, it exercises control over revolving planets by entering into each one of them. Dawn is one and it illuminates this entire solar system. It is One Primordial Matter which wondrously evolves into all that is seen. It is One God who extends into, and controls, every atom in the cosmos.

Many people who have lost their job, family members and friends feel they are alone and helpless. Being alone does not mean that we are powerless. Power is strength, and its many forms are:

1. muscular power – the strength imaged in our physical body limbs.
2. fiscal power – strength shown in the extent of material possessions.
3. mental power – strength shown in our faith, creativity, and thought management, etc.
4. moral power – strength seen in our pursuit of truth, virtue, courage and firmness, etc.
5. intellectual power – strength shown in our ability to engage in, and disseminate, erudite ideas.

The foregoing forms of power are inherent in each of us. Not having multiple companions and resources does not preclude us from having power. The Veda tells us that the power of one is present in our soul, and if properly developed, this soul power can be tremendous. This Mantra, talking of this power, says:

1. *Look at fire. It is one but, it is kindled in various ways.* Fire is one but it manifests virtually everywhere. Fire cooks and digests our food, and heats our home; there is fire in electricity, in the sun, in the sky, on the moon, and in volcanic lava. Fire is energy and energy keeps the cosmos functional.

2. *The sun, too, is one and, alone, it exercises control over*

www.thearyasamaj.org

revolving planets by entering into each one of them. The sun is the epicenter of the solar system. Planets revolve around the sun and are kept on their planetary path because of the pull of the sun's gravity. Gravity enters, as it were, into all the planets, causing the single sun to exercise control over all of them.

3. *Dawn, too, is one but it illuminates this entire solar system.* Dawn marks the beginning of the twilight that comes before sunrise. During the night, hardly anything is distinguishable. The advent of dawn that alone brings enough light to earth to allow for the multitude of living beings to see, get out of bed and commence their daily outdoor activities.

4. *It is One Primordial Matter which wondrously evolves into all that is seen.* Vedic theory of creation says that, at the time of cosmic creation, God-as-Agental-Cause activated dormant Matter to evolve into galaxies, solar systems, planets and other bodies contained in the cosmos. Other than God and Soul, everything we perceive subsists in, and evolves from, Matter.

5. *And finally, it is One God who extends into, and controls, every atom in the cosmos.* He, alone, without assistance from any other force, designs, nurtures and transforms this multi-form cosmos and everything contained in it.

We all have in us a fraction of the power of fire, sun, dawn, Matter and God. To commence on a project, we do not need to wait for companions and their resources to arrive. Like the sun attracting planets, we too, with our soul power, can command people's attention and have them work with us. Each follower may be a "zero" compared to your skills, but each of these zeroes will add to you-as-one. Think of 1, 10, 100, 1000. History attests that revolutionaries started their work all on their own. They later on attracted enough zero-like resources, human and otherwise, and with each of these zeroes, they made their reform work successful. Think of the <u>one</u> Raam, the <u>one</u> Krishna and the <u>one</u> Dayananda and the revolutions they engineered. Today, Raavan, Duryodhan and many of the social and religious ills that dogged India are all gone. It's because of the power of ONE. *So, my dear friend, are you ready, willing and able to assert yourself as possessing the power of one?*

www.thearyasamaj.org

YOG-SADHANA SHIVIR AT PAROPKARINI SABHA (AJMER)

- B.D.UKHUL

Yog Sadhana Shivir was organized by Paropkarini Sabha, Ajmer from 17th to 23rd June, 2013 as per its notifications in its fortnightly magazine Paropakari and the participants were requested to report in their Ashram by 4.00 P.M. on 16th June, 2013. Accordingly I also reached there on afternoon of 16th June and got my formal registeration and was allotted Baithak number (Seating arrangement). Senior persons who could not sit on the floor were provided chairs at the identified spots. This shivir had received immense response.However, all were accommodated and provided suitable living accommodation in rooms/ halls in an organized manner. Soon after registeration, the participants were provided with a set of papers giving instructions and conditions to be followed during their stay at the premises. Besides this, it gave a time table commencing from 4.00 A.M with recitation of Jagran mantras and ending with Cows' milk before retiring to bed at 9.30 P.M. The classes comprised of practical Dhyan-Upasana(Swami Vishwangji); Asans(Yatindra Shastri); Yog-darshan(Acharya Somdevji); Sankhya-darshan(Acharya Satyendraji) ;Ishwar,Jeev, Prakriti and Shanka Samadhan (Sw. Vishwangji) and Atm-nireekshan by Swami Vedpatiji. Prof. Dharmvir ji delivered Vedic-pravachans after morning Yagya and also took a few Dhyan-upasana sessions to explain and practice the meditation following Sandhya mantras.

The Shivir was organized in an exemplary manner according to the stipulated time table. The number of lady-sadhikas was quite significant. As an outcome of the Shivir, we found that one of the sadhaks who was alcoholic openly announced that he had resolved to give up this evil habit and all the participants expressed their personal experience of the Shivir and

www.thearyasamaj.org

also submitted individual Sankalp Patras with resolve to give up their ill-habits and go for introspection to inculcate noble thoughts in their mind. The Shivir afforded a unique opportunity to discover one's own-self and identify one's drawbacks with a sincere resolution to follow-up for self-improvement in body, mind and spirit. Overall, the Yog Sadhana Shivir left a deep impression and enhanced the understanding of subjects like Ishwar, Jeev, Prakriti and constituents of the universe created by the Almighty God and it also gave an insight to Yog-darshan By Rishi Patanjali and Sankhya-darshan by Rishi Kapil to prepare the sadhaks for preparation to lead the path to Moksha- the ultimate goal of a human being. Practical Dhyan-upasana sessions of Swami Vishwang were quite lucid and elevating.

The recordings of the entire proceedings of the Shivir were being made and at the conclusion of the Shivir, a complete CD of the Shivir was provided to participants for their perusal and practice at their residence. The Brahmacharis of the Ashram impressed all by their devotion and sincerity in performance of their respective assignments and they are going to prove as assets to the spiritual scene and fulfillment of the Vedic mission of Swami Dayanand Saraswati.

It was informed that next Shivir of this level will be held from 20th-27th October, 2013.

C2A/58, Janakpuri, New Delhi-110058

Dayanand Mukti Dhaam

Bhinoy Kothi, Ajmer

www.thearyasamaj.org

AJMER SHIVIR IN PICTURES

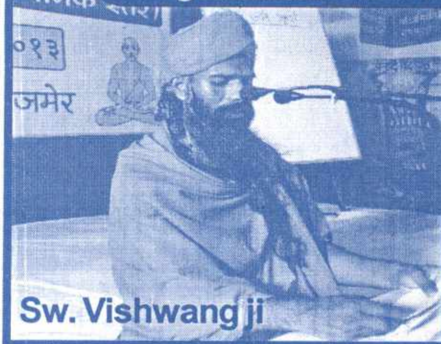

Sw. Vishwang ji

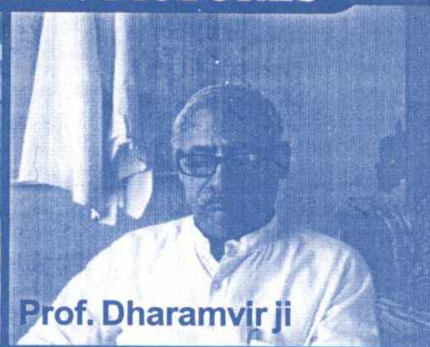
Prof. Dharamvir ji

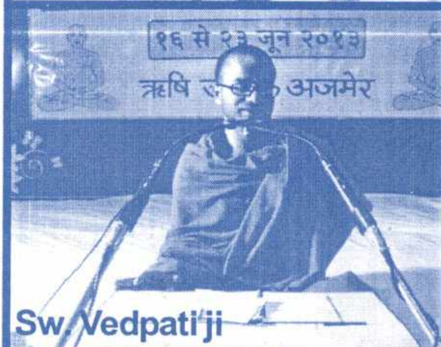

Sw. Vedpati ji

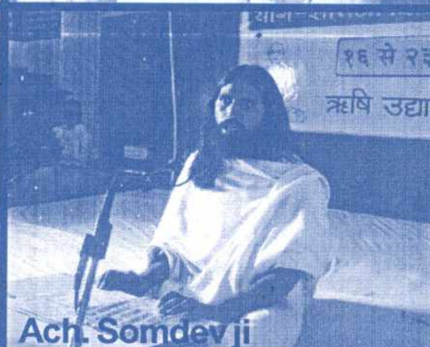
Ach. Somdev ji

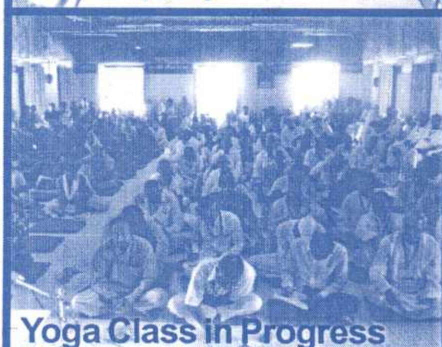
Yoga Class in Progress

Yajna-ahuti by Brahmacharis

Yajna in Progress

Propkarini Sabha

www.thearyasamaj.org

RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2011-2013

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापतिः।।(यजु.32/1)
ऋषि स्वयंभु ब्रह्म, देवता–परमात्मा, छन्द–अनुष्टुप्

अर्थ– संपूर्ण जगत् का कारण जो परमेश्वर है उसी का नाम अग्नि है। (तदादित्यः) जिसका कभी नाश न हो और स्वप्रकाश स्वरूप हो, इससे परमात्मा का 'आदित्य' नाम है। (तद्वायुः) सारे संसार का धारण करने वाला, अनन्त बलबान्, प्राणों से भी प्रिय है, इससे ईश्वर का नाम वायु है। (तद् उ चन्द्रमाः) जो स्वयं आनन्दस्वरूप है और अपने भक्तों को आनन्द देने वाला है अतः परमात्मा को 'चन्द्रमा' कहा है (तदेव शुक्रम्) वही चेतनस्वरूप ब्रह्म सब जगत् का कर्ता है (तद्ब्रह्म) वह अनन्त चेतन सबसे बड़ा है। (ता आपः) उसे सर्वत्र व्याप्त होने से 'आपः' वह कहा है। (स प्रजापतिः) वह ही सारे जगत् का स्वामी और पालनकर्ता है अन्य कोई नहीं। उसी को हम सर्वेश और पालन मानें, अन्य को नहीं।

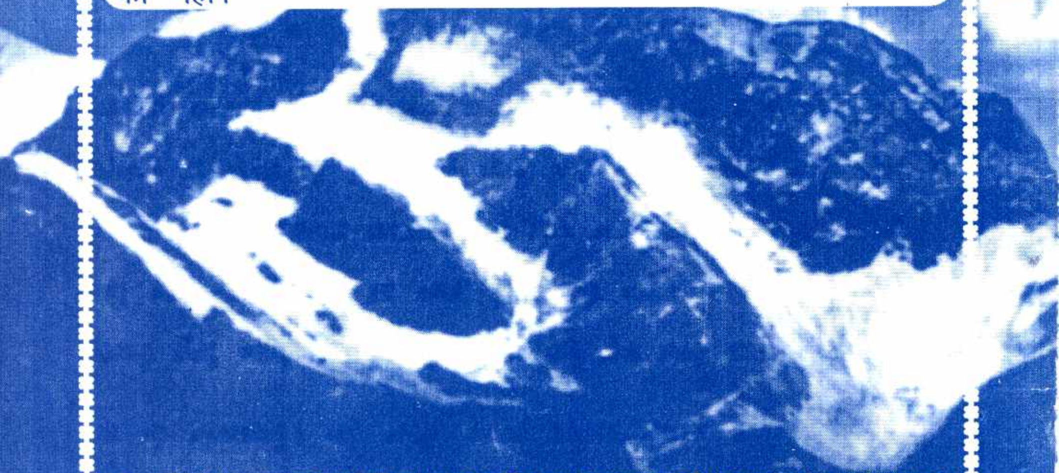

'Agni' is the name of God, the efficient cause of the whole universe. God is called 'Aaditya' the Lustrous because he is not subject to destruction. God is called 'Vaayu' the Dynamic, possesses infinite strength. God is called 'Chandrama', the Bliss-importer, unfasts supreme bliss to his devotees. That 'Brahma' the Supreme Being who is All -sentience is Maker of the whole universe, That is why he is called 'Shukra' also. Being All-knowing and All-pervasive God is called 'Aapa'. He alone and none else is 'Prajapati' the Master and Protector of the whole universe. Only to Him along shall we regard as the fulfiller of our aspirations and as our Protector.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58